

कभी यूँ डूब जाता हूँ मैं अपने उन खयालों में,
वो जिनमें जान थी मेरी उन्हीं रेशम सी बालों में,
मेरे दिल के अंधेरोँ पर तेरे दिल के उजालों में,
वो शर्माता हो जिनसे फूल, उन कोमल सी गालों में,
तेरी गुस्ताख आंखों पर हुए उन सब बवालों में,
किसी की जान जो ले ले तेरे मुस्कान के जालों में,
कभी यूँ डूब जाता हूँ मैं अपने उन खयालों में॥

मेरे बदरंग जीवन पे छिड़े हल्के गुलालों में,
वो लंबी कशमकश से पूर्ण जीवन के फिलहालों में,
जो मेरे दिल ने पूछे थे उन्हीं सच्चे सवालों में,
जो यूँ ही कह दिए थे बस तेरे झूठे हवालों में,
वो जिनमें बंध बैठा था, तेरे शातिर से चालों में,
जो तुझ पर भूल बैठा था, मैं अपने उन जलालों में,
कभी यूँ डूब जाता हूँ मैं अपने उन खयालों में॥

जो तेरे साथ काटे थे, उन्हीं चारु से कालों में,
वो जिनकी कद्र थी मुझको, उन्हीं फीके जमालों में,
मेरी छोटी सी बातों पे, तेरे उठते उबालों में,
तेरे उस क्रोध अग्नि पे, मेरे शीतल संभालों में,
तेरे उसे व्यर्थ सीरत से हुए बर्बाद हालों में,
तू जिनको स्याह कर बैठी वो भावों के दलालों में,
कभी यूँ डूब जाता हूँ मैं अपने उन खयालों में॥

जो तुझसे कह नहीं पाया, वे शब्दों के मलालों में,
जो तुझसे प्यार करने से हुए उन सब कमालों में,
वो जिनमें प्यार होता है उन्हीं दिल के विशालों में,
तुझे मैं याद रखूँगा सभी जीवन के सालों में,
जो लोगों को सुनाऊँगा, हमारी उन मिसालों में,
कभी यूँ डूब जाता हूँ मैं अपने उन खयालों में॥

----- बिधान आर्या